VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

कबीर वाणी पर बौद् दर्शनका प्रभाव

डा. हरपाल बौद्ध

एसोसिएट प्रोफ़ेसर, इतिहास विभाग
गुजरात यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद, गुजरात
(मो) ७६००३६३७२५

भारतीय तत्वचिंतन और विचारधारा का गौरव और प्रभाव पूरे विश्व में प्रसारित हुआ है, जिनमें यहाँ की मिट्टी में जन्म लेने वाले बहुजन महापुरुषों और सन्नारियों का महती योगदान रहा है I आज हम हमारी बौद्ध सभ्यता और संस्कृति को लेकर गौरवान्वित महसूस हो रहे हैं, तो उसमें बहुजन समाज में जन्मे विद्वान और प्रतिभाशाली सुधारकों, चिंतकों और सामाजिक क्रांति के पथदर्शकों का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है I उनके चिंतन, मनन और सामाजिक आन्दोलनों ने समाज को बेहतर बनाने के लिए सार्थक प्रयास किये हैं I समतामूलक श्रेष्ठ समाज के निर्माण में उन्होंने अपना महती योगदान दिया हैं I उनकी विचारधारा और साहित्य ने समाज के दबे-कुचले तबकों और शोषित वर्गों में नई जान फूंक दी और उनमें श्रेष्ठ जीवन जीने की उम्मीदें जगाई I उनके विचारों ने पीड़ित और शोषित लोगों में उत्साह का निर्माण किया और साथ में उनमें एक मनुष्य होने का गौरवपूर्ण अहसास करवाया I उन्होंने स्वयं सहज जीवन जीकर मानव मात्र की गरिमा और मानवी मूल्यों का सूत्रपात किया और महाकारूणिक बुद्ध की तरह मनुष्य की अहमियत को पहचाना और मनुष्यों को निज बल से कुशल मार्ग पर चलना सीखाया I

क्रांतिकारी कबीर एक महान समाज सुधारक

भारतीय इतिहास और साहित्य में क्रांतिकारी कबीर ऊँचे पायदान पर खड़े हुए महान जनकवि और सामाजिक क्रांतिकारी सुधारक हैं I अगर मध्यकालीन इतिहास और साहित्य से कबीर महान और महान रवीदास जी को हटा दिया जाय तो पूरा इतिहास शुष्क और निरीह प्रतित होता है I वे समण सभ्यता के वाहक, प्रवाहक और मार्गदर्शक है I क्रांतिकारी कबीर की वाणी ने एक समतावादी सोच और विचारों का निर्माण किया है जिससे समतामूलक श्रेष्ठ मानव समाज बना I उनके विचारों और साहित्य ने बहुजन समाज को सोचने-समझने के नए आयाम प्रदान किए I कबीर के मनुष्य केन्द्रित विचारों ने मनुष्य की अहमियत को समझा और उन्हें उनके जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए प्रेरित किया I वास्तव में कबीर जी बौद्ध दर्शन और विचारों के वाहक है I उनके जीवन, व्यक्तित्व, कार्य और कृतित्व में हमें बुद्ध-वाणी के संदेश स्पष्ट रूप से ज्ञातव्य हो रहे हैं I उनके क्रांतिकारी व्यक्तित्व की पुष्टि तत्कालीन समय के प्रामाणिक ग्रंथो से भी मिलती है I 'अबुल फजल लिखित 'आइन-ए-अकबरी' में, जो अकबर महान के ४२ वें वर्ष में सन १५९८ में लिखी गयी थी, कबीर के बारे में दो स्थानों-पृष्ठ १२९ तथा १७१ पर जिक्र मिलता है I इनमें कबीर को 'मुवाहिद' अर्थात अद्वैतवादी कहा गया है I' (बेसन्तरी, पृ. ५१)

क्रांतिकारी कबीर जी का विद्रोही सामाजिक द्रष्टिकोण

क्रांतिकारी कबीर जी के विचारों में सामाजिक विद्रोह स्पष्ट तौर पर दिखाई देता है I उनके विद्रोह का सामाजिक द्रष्टिकोण है जिसमें एक ओर समतामूलक सोच का आगाज है तो दूसरी ओर समाज में व्याप्त अन्याय, बुराई, असमानता के प्रति विद्रोह है I कबीर को 'विद्रोही कवि' कहना उचित है, क्योंकि जो काम तलवार नहीं कर सकती वह काम उनकी कलम ने किया है I उन्होंने श्रम और कलम से एक वास्तविक श्रेष्ठ जीवन का उदाहारण प्रस्तुत किया है I सामाजिक समता और सामाजिक परिवर्तन के लिए बहुजनों में एक ललक जगाई I जातिवादी मानसिकता से ग्रस्त इतिहासकारों ने उनकी उपेक्षा की है और उनकी तेजाबी वाणी की व्यापक आलोचना भी की है I पर कबीर

http://vidyajournal.org

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY
Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal
ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

अपनी जगह पर चट्टान की तरह खड़े हैं, जिसे कोई नहीं हिला सकताI 'विद्रोही कबीर' ने अपने काल में एक ऐसा स्वाभिमान आंदोलन चलाया था जो आज भी उसकी दुंद भी चौराहे से लेकर विश्वविद्यालयों तक बज रही है I उन्होंने जीवनपर्यंत बहुजन समाज में सम्मान और स्वाभिमान की चेतना जगायी I कबीर ने महाकारूणिक बुद्ध की तरह अपने समय में व्याप्त कुरीतियों, जातिभेद, चातुर्वर्ण्य, उंच-नीच, स्त्री-पुरुष असमानता, पाखंड, अंधश्रद्धा और सबसे महत्वपूर्ण जाति आधारित सामाजिक विषमता का प्रचंड विरोध किया I क्रांतिकारी कबीर जी ने स्वयं गलत और दकियानूसी मान्यताओं, परम्पराओं का न सिर्फ खंडन किया, बल्कि बहुजन समाज को भी उन गलत मान्यताओं, परम्पराओं को तोड़ने के लिए सदैव प्रेरित किया I

कबीर क्रांति से प्रभावित बाबासाहब डा. आंबेडकर

बोधिसत्व बाबासाहब डा. आंबेडकर ने अपने जीवन पर जिन तीन पथप्रदर्शकों के प्रभाव की बात की है, जिनमें महाकारूणिक बुद्ध, क्रांतिकारी कबीर और महामना जोतिबा फुले संमिलित हैं I ये तीन महापुरुष इतिहास के तीन भिन्न कालों से सम्बद्ध हैं I जिसमें प्राचीन काल से महाकारुणिक बुद्ध, मध्य काल से सुधारक कबीर और आधुनिक काल से राष्ट्रपिता जोतिबा फुले है I २० वी सदी के विश्व के सर्वाधिक पढ़े-लिखे व्यक्ति ज्ञान के प्रतिक बाबासाहब डा. आंबेडकर इन तीनों को ही अपना पथप्रदर्शक माना है, क्योंकि उनके विचारों ने तत्कालीन समाज को तो प्रेरित किया और साथ में अपने मानवतावादी और कल्याणकारी विचारों के ऐसे बीज बोए जो आज भी बहुजन समाज में निरंतर अंकुरित और पल्लवित हो रहे हैं I बाबासाहब डा. आंबेडकर जैसे महामानव ने विभिन्न मानव विज्ञानों जैसे समाजशास्त्र, इतिहास, अर्थशास्त्र, एन्थ्रोपोलोजी, राजनीति विज्ञान इत्यादि का अध्ययन किया और अथाह ज्ञान प्राप्त किया, उन्होंने महसूस किया कि मानवता के भले के लिए जो भी ज्ञान उन्होंने प्राप्त किया है, वह इन तीन महान व्यक्तित्वों की शिक्षाओं में पहले से ही संनिहित है I इन तीनों के विचारों और कार्यों ने संपूर्ण मानव सभ्यता को गौरवान्वित किया है I

महान कबीर की वाणी पर बौद्ध दर्शन का प्रभाव

महान कबीर की वाणी पर बौद्ध दर्शन का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है I जिस प्रकार महाकारुणिक बुद्ध ने वैदिक परंपराओं, गलत धारणाओं को सिरे से ख़ारिज कर दिया था, वैसे ही कबीर ने अपने काल में हिंदू व मुस्लिम दोनों ही संस्कृतियों की असंगत मान्यताओं, अंधविश्वास और पाखंड का प्रबल विरोध किया था I कबीर कहते है:

स्मृति वेद पढ़े असरारा, पाखंड रूप करे हकारा I
जस खर चंदन लादेड मारा, परिमल वास ना जानु गंवारा II
वेद कुरान सब झूठ है, हमने उसमें पोल देख्या I
अनुभव की बात कहें कबीरा, घट का पर्दा खोल देख्या II

कबीर ने इन पदों में पाखंडी शास्त्रों, कर्मकांडो, आडम्बरों का विरोध किया है I स्व-ज्ञान से ही खुद को परिवर्तित किया जा सकता है I अनुभव मनुष्य को सही मार्ग दिखाता है और स्व-प्रयास से ही दिल का दरवाजा खुलता है I घट का पर्दा यानि चित्त पर पड़े सारे मलों को दूर करने की बात है I चित्तशुद्धि अर्थात मन को प्रशिक्षित करने की बात है I महाकारुणिक बुद्ध भी मन चित्त को प्रशिक्षित करने की बात करते है I

कबीर वाणी में श्रेष्ठ जीवन के मापदंड पंचशील

'महाकारूणिक बुद्ध का पंचशील समता, दया, करुणा और मैत्री पर आधारित है I महाकारूणिक बुद्ध ने अनाचार से सिसकती मानवता को पंचशील के माध्यम से करुणा और मैत्री में परिवर्तित किया I कबीर जी को महाकारूणिक बुद्ध का पंचशील पसंद आया और उन्होंने पंचशील के विरुद्ध सभी ब्राह्मणी मूल्यों को नकारकर मानवीय मूल्यों की प्रस्थापना के लिए महाकारूणिक बुद्ध के पंचशील को अपने बहुजन समाज को अपनाने का क्रांतिकारी सन्देश दिया I' महाकारुणिक बुद्ध की सम्यक वाणी हमें कबीर के साहित्य में पग-पग पर मिलती है I बहार से देखने

http://vidyajournal.org

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

पर कबीर की वाणी में थोड़ी कठोरता नजर आती है मगर उनका महान उद्देश्य मनुष्य जीवन को श्रेष्ठ बनाने का ही है I

प्राणी हिंसा से विरत रहना

महाकारुणिक बुद्ध ने प्राणी हिंसा से विरत रहने की शिक्षा दी है I मन-वाचा-काया से होने वाली सभी हिंसा से दूर रहने की बात महाकारूणिक बुद्ध ने की है I हिंसा के विरुद्ध प्रेम, मैत्री और करुणा की बात की I वैसे ही महान कबीर जी ने जीव हिंसा से विरत रहने की बात की है I अ-धर्म को धर्म बताने वाले और हिंसा से भरे यज्ञों की खिल्ली उड़ाते हुए कबीर जी कहते हैं कि,

अजा मेघ जो मेघ यज्ञ, अश्व मेघ नर मेघ I
कहैं कबीर अधर्म को धर्म बतावैं वेद II

अर्थात: बकरे, गाय, घोड़े, और यहाँ तक कि मनुष्यों की यज्ञ-हवन के नाम पर वध करने जैसे हिंसक एवं अधर्म के कार्य को भी वेद धर्म बताते हैं I

पढ़े वेद और करै बड़ाई, संशय गाँठि अजहूँ नहिं जाई I
पढ़े शास्त्र जीव वध करई, मुडी काटी अगवन के धरई II

अर्थात: वेदों को पढ़ते हैं I अहंकार में फूलकर बड़ाई करते हैं कि वैदिक सर्वोपरि I धर्म शास्त्रों को पढ़कर जीव का वध करते हैं I पशुओं का सिर काटकर जड़ या कल्पित देवताओं के आगे रखते या हवन करते हैं I ये भविष्य में अपना गला काटने का बीज बोते हैंI संदेह एवं अज्ञान की ग्रंथि अभी नहीं खुली है I

शील वंत सबसो बड़ा, सब रत्नो की खान I
तीन लोक की सम्पदा, रही शील में आन II

अर्थात: शीलवान व्यक्ति सबसे श्रेष्ठ है, और सब रत्नों की खान है I तीनों लोगों को सारी संपदा शील गुण में स्वत: आ जाती है I इस प्रकार कबीर जीव हिंसा से विरत रहने की शिक्षा देते हैं I

जिव मति मारो बापुरा, सबका एकै प्राण I
हत्या कबहूँ न छुटी है, जो कोटिन सुनो पुराण II

अर्थात: बेचारे दीनहीन जीवों को मत मारो I सभी को अपने प्राण एक समान प्रिय हैंI चाहे करोड़ो पुराण सुन लो परंतु हत्या का अपराध कभी छूट नहीं सकता I

चोरी से विरत रहना

कबीर श्रम को शील का अंग मानते हैं I जो श्रम करता है वह न चोर हो सकता है और न ही वह किसी का धन छीन सकता है I कबीर का संदेश है:

श्रम ही ते सब कुछ बने, बिन श्रम मिले न काहि I
सीधी अंगुली घी जमों कवहूँ निकसै नाहिं II

अर्थात: परिश्रम से ही जीवन में सफलता मिलती है I बिना परिश्रम के किसी को कोई सफलता नहीं मिल सकती I जमे हुए घी को यदि सीधी अंगुली से निकालना चाहें तो वह भी कहां हाथ लगता है I

चोर बुराई तूमरी गाडै पानी माँहि I
वह गाडै तो उछले, करनी छानी नाहिं II

अर्थात: यदि चोर चुराई हुई तूमडी को पानी में गाड़कर छिपाना चाहे तो वह उछल कर बाहर आ जाती है I उसी प्रकार हमारे द्वारा किये गए चोरी जैसे अकुशल कर्म छिपाये नहीं छिप पाते हैं I

श्रम ही ते सब होत है, जो मन राखै धीर I
श्रम ते खोदत कूप ज्यों, थल में प्रकटै नीर II

http://vidyajournal.org

© 2022 Vidya – A Journal of Gujarat University

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

अर्थात: धैर्यपूर्वक श्रम करने से ही सब कार्यों में सफलता मिलती है I धीरज रखकर परिश्रम पूर्वक धरती में कुआं खोदने पर उसमें पानी निकल आता है I कबीर सामाजिक यथार्थ पर तर्कसंगत विचार प्रस्तुत करते हैं I

व्यभिचार से विरत रहना

महाकारुणिक बुद्ध ने दुखी जीवन के लिए व्यभिचार को जिम्मेदार माना है I उन्होंने कहा कि स्त्री-पुरुष दोनों को व्यभिचार से विरत रहना चाहिए I कबीर की वाणी में भी व्यभिचार के बारे में कहा गया है-

नारी निरखि न देखिए, निरखि न कीजै गौर I
देखते ही ते विष चढ़े, मन आवै कुछ और II

अर्थात: पुरुषों को चाहिए कि वे कामवासना के वशीभूत होकर स्त्रियों को न देखें I यदि कदाचित उन पर द्रष्टि पड़ भी जाये तो कामुक द्रष्टि से नहीं देखना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से विषय वासना का जहर और बढ़ता है और मन में कामुक विचार ही उत्पन्न होते हैI

मिथ्या भाषण से विरत रहना

साँचे कोई न पतीजई, झूठे जग पतियाय I
पांच टका की घोपटी, सात टकै बिक जाय II

अर्थात: सच्चे आदमी पर कोई विश्वास नहीं करता है और झूठ पर सारी दुनिया विश्वास कर लेती है I व्यापारी के झूठ बोलने के कारण पांच टके की धोती सात टके में बिक जाती है I

साँचे कोई न पतीजई, झूठे जग पतियाय I
गली गली गोरस फिरै, मदिरा बैठ बिकाय II

अर्थात: सत्य बात पर लोग विश्वास नहीं करते है और झूठी बात पर सारी दुनिया विश्वास करती है I दूध गली-गली में बेचा जाता है, फिर भी नहीं बिकता, और शराब बैठे-बैठे दुकान पर ही बिक जाती है I

मन मैला तन उजरा, बगुला कपटी अंग I
तासों तो कौवा भला, तन मन एकहि अंग II

अर्थात: मन में राग-द्वेष का मैल हो, शरीर बगुले जैसा उज्ज्वल हो ऐसे कपटी व्यक्ति से तो कौवा ही अच्छा है जो कम-से-कम बाहर भीतर से तो एक समान है I

मद्यपान एवं नशीले पदार्थों से विरत रहना

मांस मछरिया खात हैं, सुरापान सो हेत I
ते नर जड़े से जायेंगे ज्यों मूरी को खेत II

अर्थात: मांस, मछली इत्यादि माँसाहार का सेवन करने वाले तथा शराब पीने वाले लोगों का जड़ मूल से उसी तरह नष्ट हो जायेंगे जैसे खेत में उगी हुई मूली को उखाड़ने पर वह समूल नष्ट हो जाती है I

मांस भिखै मदिरा दिवै, धन विश्वास खाय I
जुआ खेलि चोरि करै, अंत समूला जाय II

अर्थात: जो लोग मांस और शराब का सेवन करते हैं I धन को वेश्या गमन में बर्बाद करते हैं, जुआ खेलते हैं और चोरी भी करते हैं, ऐसे लोग पूरी तरह बरबाद हो जाते हैं I

भाँग तमाकू छतरा, आफू और शराब I
कौन करेगा बंदगी, से तो भये ख़राब II

अर्थात: भाँग, तम्बाकू, अफीम और शराब का सेवन करने वाले दुर्जनों को ऐसा कौन मूर्ख व्यक्ति होगा जो इन्हें नमस्कार करेगा I

http://vidyajournal.org

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

ऐसे असंख्य उदाहरण दर्शाते है कि क्रांतिकारी कबीर जी के जीवन और चिंतन पर बौद्ध धम्म का जबरदस्त प्रभाव दिखाई पड़ता है I साधु-सतसंगी कबीर जी स्वत: बुद्ध क्रांति के वाहक बने और समतावादी समाज निर्माण में वे मील के पत्थर साबित हुए I कबीर के धम्म प्रेरित विचारों ने भारतीय साहित्य को एक नया आयाम प्रदान किया है और सामाजिक क्रांति के इतिहास में वे अप्रितम साबित हुए है I महाकारूणिक बुद्ध ने एक समतावादी समाज निर्माण की बात की थी वैसे ही महान सुधारक कबीर जी ने भी समाज में व्याप्त प्रत्येक बुराईयों को मिटाने की सबल वकालत की थी I वास्तब में क्रांतिकारी कबीर जी सामाजिक परिवर्तन के अगुआ सिद्ध हुए और धम्म मार्ग को आगे बढ़ाने वाले पथप्रदर्शक बने I

सर विलियम हंटर ने यथार्थ में क्रांतिकारी कबीर जी को १५ वीं सदी का 'भारतीय लूथर' कहा है क्योंकि समाज में व्याप्त हर बुराई और अनाचार के विरुद्ध उनकी कलम एक ओर तलवार की भांति चली है और दूसरी ओर समतामूलक समाज निर्माण में सहायक सिद्ध हुई है I उनकी वैचारिक क्रांति ने आज से ५०० साल पूर्व एक धर्मनिरपेक्ष समाज की कल्पना ही नहीं की बल्कि नींव भी रखी I मानवी मूल्यों और मानव अधिकारों का सूत्रपात किया I सही में वे नये युग के प्रवर्तक थे, सामाजिक परिवर्तन के अग्रदूत थे और युग निर्माता थे I आईए ऐसे महान क्रांतिकारी कबीर जी के विचारों को अपने आचरण में उतारकर स्वयं श्रेष्ठ बने एवं श्रेष्ठ समतामूलक समाज के निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन ईमानदारी पूर्वक करें I

संदर्भ

1. बेसन्तरी, देवेन्द्र कुमार, भारत के सामाजिक क्रांतिकारी
2. दयाराम एवं रीता भुइयार कबीर पंथी, क्रांतिकारी कबीर
3. गौतम, एस.एस., कबीर ने कहा
4. भारती कंवल, कबीर: एक विश्लेषक

http://vidyajournal.org